दवा-प्रतिरोधी तपेदिक का बढ़ता खतरा

डॉ. रामप्रताप गुप्ता

विश्व स्वास्थ्य संगठन की सन 2012 की रिपोर्ट के अनुसार भारत में समस्त दवा प्रतिरोधी (आगे से केवल दवा प्रतिरोधी प्रयुक्त होगा) तपेदिक के रोगियों की संख्या 63,000 थी जो कि चीन के पश्चात विश्व में सबसे अधिक थी। तपेदिक के नए रोगियों में दवा प्रतिरोधी रोगियों की संख्या 2.3 प्रतिशत और पुराने रोगियों में 12 से 17 प्रतिशत थी। विश्व में सर्वाधिक दवा प्रतिरोधी तपेदिक वाले 27 राष्ट्रों में भारत का स्थान चीन के पश्चात दूसरा था। दवा प्रतिरोधी तपेदिक के बढ़ते प्रसार के पीछे एक कारण तपेदिक की दवाइयों का बाज़ार में अनियंत्रित रूप से सुलभ होना है।

पिछले 40 वर्षों से तपेदिक की कोई नई दवा बाज़ार में नहीं आई थी। कहा जा रहा था कि गरीबों की बीमारी होने तथा उत्पादन में अधिक लाभ प्राप्ति की संभावना न होने के कारण दवा कंपनियां इस दिशा में शोध में कोई रुचि नहीं ले रही थी। अब खुशी की बात है कि अगले कुछ वर्षों में तपेदिक की अनेक नई दवाइयां बाज़ार में आने की संभावना बन रही है। अमरीका में हाल ही में बेडाक्वीलीन नामक नई दवा बाज़ार में सुलभ हुई है तो देश में अनेक नई दवाइयों के प्रवेश तथा तपेदिक के दवा प्रतिरोधी रोगियों की संख्या तेज़ी से बढ़ने की पूरी संभावना बनेगी।

इन नई दवाइयों के उपलब्ध होने पर दवा प्रतिरोधी तपेदिक का प्रकोप न बढ़े, इस हेतु क्या किया जाए, इस बारे में सुझाव देने के लिए भारत सरकार ने भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद के अध्यक्ष श्री वी.एम. कटोच की अध्यक्षता में एक समिति की नियुक्ति की है। कई स्वास्थ्य विशेषज्ञ इस समिति के सदस्य नियुक्त किए गए हैं। इस समिति को तपेदिक की नई दवाइयों का दुरुपयोग रोकने हेतु सुझाव देने को कहा गया है। सुझाव देने के लिए समिति के सामने कोई समय सीमा नहीं रखी गई है।

चूंकि तपेदिक की दवाइयों का बाज़ार में सर्वत्र सहज उपलब्ध होना दवा प्रतिरोधी तपेदिक के प्रसार के पीछे प्रमुख कारण माना गया है अतः स्वास्थ्य क्षेत्र में सक्रिय लोग पिछले कुछ समय से मांग कर रहे हैं कि तपेदिक की दवाइयों के बाज़ार में सर्वत्र उपलब्ध होने पर रोक लगाई जाए। उन्होंने यह भी कहा है कि तपेदिक के प्रत्येक रोगी को सार्वजनिक क्षेत्र में ही दवाइयां उपलब्ध कराई जाएं ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि रोगी दवा का 6 माह का कोर्स पूरा करे और बीच में दवा लेना बंद न करे। वर्तमान में इन दवाइयों के बाज़ार में सुलभ होने तथा निजी चिकित्सकों से इलाज लेने पर तपेदिक के मरीज़ कुछ माह दवाइयां खरीदते हैं और 2-3 माह में जब उनका वज़न बढ़ जाता है, भूख खुल जाती है तो लगता है कि वे अब तपेदिक से मुक्त हो गए हैं। आर्थिक स्थिति भी महंगी दवाइयां खरीदने लायक नहीं होती है, तो वे दवा लेना बंद कर देते है। वास्तव में उन्हें तपेदिक से पूर्ण मुक्ति नहीं मिल पाती है और कुछ माह पश्चात ही वे तपेदिक के पुनः शिकार हो जाते है। अब जो तपेदिक उन्हें होती है, उसके दवा प्रतिरोधी होने की पूरी-पूरी संभावना होती है। ऐसे में जो स्वस्थ व्यक्ति इन रोगियों के माध्यम से तपेदिक के शिकार होते हैं, वे भी दवा प्रतिरोधी तपेदिक के शिकार हो जाते हैं।

मेडिसिन सान्स फ्रंटियर्स और तपेदिक एवं फेफड़े की बीमारियों के विरुद्ध इंटरनेशनल यूनियन के अनुसार दवा प्रतिरोधी तपेदिक की दवाइयों का बाज़ार मुख्य रूप से ब्राज़ील, रूस, भारत और चीन जैसे राष्ट्रों में है और अधिसूचित दवा प्रतिरोधी तपेदिक के 60 प्रतिशत मरीज़ इन्हीं राष्ट्रों में है। अगर ये राष्ट्र ही तपेदिक की दवाइयों के खुले बाज़ार में उपलब्ध होने पर रोक लगाकर केवल सार्वजनिक क्षेत्र में ही उन्हें उपलब्ध कराएं, साथ ही यह भी सुनिश्चित करें कि प्रत्येक तपेदिक रोगी उपचार का पूरा कोर्स ले और विश्व स्वास्थ्य संगठन के गुणवत्ता सम्बंधी मापदण्डों का पालन करे तो निश्चित ही विश्व में दवा प्रतिरोधी तपेदिक के प्रसार पर रोक लगाने में मदद मिल सकेगी तथा दवा प्रतिरोधी

तपेदिक की दवाइयों की आवश्यकता भी कम हो जाएगी।

तपेदिक का इलाज संभव होने के बावजूद इस बीमारी से विश्व में प्रति वर्ष 1,30,000 बच्चे अकाल मृत्यु के शिकार होते हैं। बच्चों की अकाल मृत्यु के लिए ज़िम्मेदार प्रमुख दस कारणों में से तपेदिक एक है। फिर बच्चों में दवा प्रतिरोधी तपेदिक का प्रभाव भी बढ़ता जा रहा है। वर्तमान व्यवस्था में तपेदिक के शिकार बच्चों की ठीक से जांच भी नहीं होती है और उनकी उपेक्षा हो जाती है। ऐसे में भावी पीढ़ी दवा प्रतिरोधी तपेदिक की शिकार न हो ऐसी व्यवस्था आवश्यक हो गई है।

इन सब तथ्यों को ध्यान में रखते हुए और देश को दवा प्रतिरोधी तपेदिक के शिकार होने से बचाने के लिए यह आवश्यक हो गया है कि तपेदिक की चिकित्सा हेतु वर्तमान में प्रयुक्त दवाइयां तथा भविष्य में संभावित दवाइयों की खुले बाज़ार में उपलब्धता पर रोक लगाई जाए तथा ये केवल सार्वजनिक क्षेत्र में ही उपलब्ध हों, ऐसी व्यवस्था की जाए। इसके लिए देश के सभी राज्यों में चिकित्सा सेवाओं को दुरुस्त करना होगा, उन्हें चुस्त-दुरुस्त बनाना, संवेदनशील बनाना होगा। वर्तमान में इस मद में बजट राष्ट्रीय आय का मात्र 1.2 प्रतिशत है। इसलिए सार्वजनिक क्षेत्र में ही तपेदिक का इलाज काफी कठिन दिखाई देता है, परन्तु इस दिशा में आगे बढ़ना होगा ताकि सार्वजनिक क्षेत्र में तपेदिक और अधिकांश सामान्य बीमारियों की चिकित्सा की भी व्यवस्था हो सके। ***(स्रोत फीचर्स)***

अगले अंक में

स्रोत अगस्त 2013

अंक 295

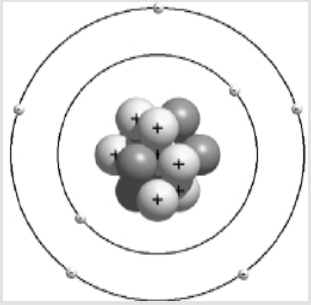

- **कार्बाइड से पके फल**
- **खतरे में हिमालय**

- **मच्छरों का दुश्मन चमगादड़**
- **परमाणु रचना के बोह्र मॉडल की शताब्दी**
- **सिलिकोसिस : एक्शन रिसर्च ने बदली तस्वीर**